आर्य समाज मंदिर में अखिल भारतीय कवि सम्मेलन आयोजित

विविध रसों की कविताओं से सजी साहित्यिक संध्या

भागलपुर जिले के आर्य समाज मंदिर में आर्य भाषा परिषद के तत्वावधान में अखिल भारतीय कवि सम्मेलन का भव्य आयोजन किया गया, जिसमें देश के विभिन्न क्षेत्रों से आए कवियों और साहित्यकारों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉ. अचल भारती ने की, जबकि मंच संचालन का दायित्व रविशंकर झा ने प्रभावशाली ढंग से निभाया।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि अशोक कुमार तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में उत्तम लयकार, सपना चन्द्रा और प्राण मोहन प्रीतम उपस्थित रहे। कार्यक्रम की शुरुआत दीप प्रज्वलन एवं सरस्वती वंदना के साथ की गई, जिससे पूरे वातावरण में साहित्यिक गरिमा और आध्यात्मिकता का संचार हुआ। इसके बाद कवियों ने क्रमवार काव्यपाठ प्रस्तुत कर श्रोताओं को भाव-विभोर कर दिया।

दुमका से आए गीतकार उत्तम लयकार के मधुर गीतों ने सभी का मन मोह लिया, वहीं गौरी तिवारी के हास्य-व्यंग्य ने श्रोताओं को खूब गुदगुदाया। समस्तीपुर से आई स्मृति झा की वीर रस से ओतप्रोत कविता ने उपस्थित लोगों में जोश और उत्साह का संचार कर दिया।कवि कुमार धनंजय सुमन की चर्चित रचना 'पत्तियों पे बतियाँ लिखूँ' की श्रोताओं ने विशेष सराहना की और तालियों की गूंज से सभागार देर तक गूंजता रहा। रांची के कवि अरुण अग्रवाल की दोहावली भी कार्यक्रम का प्रमुख आकर्षण रही। इसके अतिरिक्त दुमका के कवि सौरभ कुमार सिन्हा, विवेक मंडल, मनोज कुमार, शेखर खागड़ी सहित कई रचनाकारों ने अपनी सशक्त प्रस्तुतियों से कार्यक्रम को यादगार बना दिया।कार्यक्रम का संयोजन कर रहे वरिष्ठ कवि संजय भागलपुरी ने बताया कि इस प्रकार का अखिल भारतीय कवि सम्मेलन प्रत्येक वर्ष आयोजित किया जाएगा, ताकि हिंदी भाषा और साहित्य के प्रचार-प्रसार को नई गति मिल सके। उन्होंने हिंदी को राष्ट्रभाषा के रूप में प्रतिष्ठित करने के लिए आंदोलन को और तेज करने की आवश्यकता पर भी बल दिया।

कार्यक्रम के अंत में सभी आमंत्रित अतिथियों एवं कवियों को अंगवस्त्र, पुष्पगुच्छ और फूलमाला भेंट कर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर पच्चीस से अधिक रचनाकारों ने काव्यपाठ किया, जिससे पूरी साहित्यिक संध्या एक प्रेरणादायी और स्मरणीय आयोजन के रूप में स्थापित हो गई।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने किया प्रबुद्ध जन संगोष्ठी का आयोजन

हिन्दू संस्कृति में राष्ट्र के साथ-साथ विश्व कल्याण का भाव निहित- पटेल

आगर। हिंदू जाति वाचक नहीं अपितु संस्कृति वाचक है। इस संस्कृति में राष्ट्र के साथ-साथ विश्व कल्याण का भाव निहित है। राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ इसी संस्कृति का संवाहक बनकर राष्ट्र के प्रति समर्पित रहने वाली पीढ़ी निर्माण के लिए कृत संकल्पित भाव से अपने उद्देश्य की ओर बढ़ रहा है। उक्त विचार राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के सामाजिक सद्भाव के अखिल भारतीय सह संयोजक बलिराम पटेल ने गत दिवस आगर में प्रमुख जन गोष्ठी को संबोधित करते हुए व्यक्त किये।

स्थानीय सारंगपुर रोड़ पर स्थित मधुबन गॉर्डन में आयोजित कार्यक्रम में उपस्थित प्रबुद्ध जनों को संबोधित करते हुए पटेल ने राष्ट्र निर्माण की संकल्पना पर विस्तार से चर्चा करते हुए पटेल ने राष्ट्र और संस्कृति को एक दूसरे का पर्याय बताते हुए कहा कि जो राष्ट्र है वही संस्कृति है और जो संस्कति है वही राष्ट्र है।

आपने राष्ट्र चेतना को समझने की आवश्यकता को रेखांकित करते हुए कहा कि हिंदू संस्कृति में पर हित समाहित है और स्व हित से पर हित तक पहुंचना हमारी मूल संस्कृति है। इसलिए इस राष्ट्र को हिंदू राष्ट्र कहते हैं। आपने हिंदुत्व को परिभाषित करते हुए बताया कि हिंदू रीजन नहीं अपितु धर्म है। इसमे कर्तव्य को ही धर्म माना गया है। यह कर्तव्य रुपि धर्म ही मनुष्य को मनुष्य, समाज सृष्टि और परमात्मा से जोड़ता है। पटेल ने राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की स्थापना उसके उद्देश्य और उसकी सार्थकता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि संघ की स्थापना से लेकर अब तक के सौ वर्षों में तमाम प्रतिकूल हालातों के बावजूद संघ अपने घोषित लक्ष्य की प्राप्ति की ओर अग्रसर है। उन्होंने कहा कि हमें समाज में संघ खड़ा नहीं करना हैं बल्कि समाज का संगठन खड़ा करना है संघ इसी बात को लेकर समाज के बीच कार्य कर रहा है।

कार्यक्रम के द्वितीय चरण में आयोजन में उपस्थित प्रबुद्ध जनों ने अपनी जिज्ञासा जताते हुए सवाल भी किए जिनका जवाब अंतिम चरण में देते हुए पटेल ने राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के ध्येय पंच परिवर्तन से राष्ट्रीय पुन निर्माण पर भी प्रकाश डाला। पटेल ने इन पंच परिर्वतनों में

1-स्व का बोध अर्थात स्वदेशी
2-नागरिक कर्तव्य
3-पर्यावरण
4-सामाजिक समरसता और
5-कुटुम्ब प्रबोधन पर चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि इन पंच परिवर्तनों के अनुरूप हम अपनी जीवनशैली का निर्माण कर एक सशक्त राष्ट्र का निर्माण कर सकते हैं। इसके पूर्व पटेल और जिला संघ चालक मोहन लाल आर्य ने भारत माता के चित्र का पूजन कर गोष्ठी का शुभारंभ किया। जिला सम्पर्क प्रमुख दिनेश कुम्भकार ने कार्यक्रम की रुपरेखा पर प्रकाश डाला। दुर्गेश जायसवाल ने एकल गीत प्रस्तुत किया। कार्यक्रम में स्वास्थ्य, शिक्षा, निर्माण, विधि, श्रमिक और सामाजिक क्षेत्रों से जुड़े प्रबुद्ध जन बड़ी संख्या में उपस्थित थे। उक्त जानकारी जिला प्रचार प्रमुख योगेंद्र सिंह रावत ने दी।

बर्बरता को धर्म का चोगा ओढ़ाने का ट्रंपियापा

डोनाल्ड ट्रम्प संभवत: ऐसे अकेले राष्ट्र प्रमुख है, जिनके लिए कार्टून्स या आज की प्रचलित मजाहिया मीम्स बनाने के लिए कल्पनाशीलता या कुछ रचने की जरूरत नहीं पड़ती। इतने जबर नज़ारे और नारे उछालते हैं कि हमारे वाले पर कमतरी का अहसास तारी हो जाता है। दिन में कम-से-कम एक, आजकल औसतन आधा दर्जन ऐसे कारनामे दिखा रहे हैं कि बड़े से बड़े कार्टूनिस्ट को उनसे रश्क होने लगा है। भारत छोड़ दुनिया का मीडिया इनसे भरा हुआ है और मुश्किल दौर में भी बिना किसी अतिरिक्त खर्च के मनोरंजन उपलब्ध करा रहा है।

हाल में कुछ ख़ास ईसाई पादरियों को बुलाकर राष्ट्रपति भवन में ट्रम्प ने एक विशेष प्रार्थना कराई। ईरान पर इजरायल के साथ मिलकर किए गए हमले का पहला सप्ताह भी पूरा नहीं हुआ था कि अपनी और अपने सैनिकों की सुरक्षा, मध्य-पूर्व में फैले तनाव में ईश्वर कृपा और ज्ञान इत्यादि-इत्यादि प्राप्त करने के लिए संपन्न कराई गयी इस प्रार्थना मे पादरियों ने ट्रम्प के कंधों पर हाथ रखकर 'लेइंग ऑन ऑफ हैंड्स' नामक ईसाई रीति से प्रार्थना की। ईसाई धर्म की प्रार्थनाओ में यह चंगाई - किसी बीमार व्यक्ति को चंगा करने - वाली प्रार्थना होती है : कुछ-कुछ उसी तरह की जैसी किसी व्यक्ति की लाइलाज बीमारी को ठीक करने, उस पर चढ़े भूत-प्रेत को उतारने के लिए ओझा और गुनिया करते है।

पवित्र जल - होली वाटर - में डुबकी भर नहीं लगवाई, बाकी शैतान का बप्तिस्मा करने के जितने भी धतकरम थे, वे किये गये। ईस्टर के दिन तो हद ही कर दी, जब व्यंजना में, फिर अभिधा में खुद की तुलना ईसा मसीह से ही कर दी। इन सब कर्मकांडो की पुरोहिताई उन इवेंजेलिकल पादरियों ने की, जिन्हें ईसाई मान्यताओं के हिसाब से मोटा-मोटी राजनीतिक पादरी माना जाता हैं और जो दुनिया के कई हिस्सों में, जैसे अमेरिका और ब्राजील में, ये पादरी सामाजिक और राजनीतिक मुद्दों पर सियानपट्टी दिखाते रहते हैं।

युद्ध के बीचों बीच लाइव किये गए इस ट्रम्पियापे का मकसद न धार्मिक था, न आध्यात्मिक था। ट्रम्प कितना धार्मिक, सात्विक और पक्का ईसाई है, इस बात का प्रमाण मासूम स्कूली बच्चियों की जघन्य हत्याओं से और नरसंहारी इजरायल के हर अपकर्म को संरक्षण देकर वह दिखा चुका था।

यह पूरी तरह से सार्वजनिक दिखावे के लिए किया गया पाखंड था : उस पटकथा का हिस्सा था, जिसे अमरीकी साम्राज्यवाद के मौजूदा नेतृत्व ने अपने फौरी और दूरगामी दोनों मकसदों के लिए तैयार किया है। धर्म की आड़ लेकर उस के बहाने अपनी दुष्ट कार्यवाहियों को सही ठहराना, अपने किये को पादरियों के लबादे से ढांपना और अन्ततः पश्चिमी प्रभुत्व वाली उस दुनिया को पुनर्स्थापित करना, जिसका खाका 13 फरवरी को म्यूनिख में हुयी बैठक में ट्रम्प का विदेश मंत्री मार्को रुबियो साफ़-साफ़ शब्दों में रख चुका है। जनता की निर्मम लूट को पुण्य और धर्मसम्मत बताने के लिए जो काम पाकिस्तान सहित कई देशों में काफी पहले से किया जाता रहा है, जिसे हाल के वर्षों में भारत के हुक्मरान पूरी लगन के साथ कर रहे हैं : दुनिया के रंगमंच पर वही धूर्तता इस पाखंड में दिखाई जा रही थी।

यह पहली बार था, जब ट्रम्प को सार्वजनिक रूप से व्हाइट हाउस के कार्यालय में इस तरह प्रार्थना सभा करते देखा गया। मगर यह सिर्फ उनकी प्रार्थना तक सीमित नहीं था। ईरान पर हमले के बाद से ही इस सरासर अवैधानिक युद्ध को धर्मयुद्ध - क्रूसेड - बताने और उसके साथ सभी ईसाई धर्मानुयायियों को भरमाने की की मुहिम भी युद्धस्तर पर छेड़ दी गयी। इसका मकसद जहां, जैसा कि रुबियो ने साफ़-साफ़ कहा, बाकी ईसाईबहुल साम्राज्यवादी देशों को भविष्य में फिर से दुनिया को लूटने का सपना दिखाकर साथ लाने का था, वहीं खुद अपने देश अमरीका में तेजी पकड़ते युद्ध विरोधी वातावरण को चर्च की घंटा-ध्वनि में डुबोने का भी था। अनेक ईसाई और जो यहूदीवादी नहीं है, वे यहूदी भी, इस युद्ध की मुखालफत कर रहे हैं, उनसे भी निबटना था। इसके लिए अमरीका में काम करने वाले ज्यादातर चर्चों और उनके पादरियों को मोर्चे पर लगाया गया। शुरुआत ईसाई यहूदीवादी पंथ से कराई। इवेंजेलिकल ईसाई इनमें से एक है, जो इजरायल का दृढ़ समर्थन करते हैं, बाइबिल का अपने तरीके से पाठ कर इजरायल की सुरक्षा को आध्यात्मिक काम मानते हैं। ओल्ड और न्यू टेस्टामेंट में लिखी बातों को नोस्त्रादमस की भविष्यवाणियों की किताब की तरह पढ़ते है और उसकी ट्रम्पानुकूल व्याख्या करते है। कुछ अमेरिकी सैन्य कमांडरों ने भी इस संघर्ष को भगवान की योजना का हिस्सा बताया और बाइबिल की भाषा में इसे वह 'आर्मागेडन' -- अंतिम युद्ध - बताया, जिसके बाद यीशु मसीह की वापसी होगी। कुछ सीनेटर और राजनेता भी राजनीति के धंधे में धर्म की करेंसी चलाने के लिए इसे 2000 वर्ष से जारी 'बुराई के खिलाफ धर्मयुद्ध' बताने तक आ गए। उधर इजरायल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू भी इस आपराधिक युद्ध को धर्म का बाना पहनाने में पूरी ताकत से भिड़े थे। वह भी बार-बार धार्मिक प्रतीकों का इस्तेमाल कर जिन पर हमला किया जा रहा है, उन्हें अमालेक -- प्राचीन काल में यहूदियों के दुश्मन, जिन्हें पूरी तरह से नष्ट करने का आदेश दिया गया था - बताता रहा।

इसके लिए आमतौर से मुसलमानों - किन्तु चूंकि फिलहाल इस जंग में खाड़ी के देशो का साथ अपरिहार्य है इसलिए - और ख़ासतौर से ईरान को, कल्पित कहानियां सुनाकर, लांछित करने का अभियान-सा छेड़ दिया। ईरान की मौजूदा हुकूमत धर्म-आधारित शासन प्रणाली है, इसमें कोई शक नहीं है। हालांकि उसे सत्ता में लाने वाला भी कोई और नहीं, यही अमरीका है, जिसने पचास और साठ के दशक में सीआईए के जरिये ईरान की तब की प्रगतिशील, लोकतांत्रिक, धर्मनिरपेक्ष और साम्राज्यवादी पूँजी का राष्ट्रीकरण करने वाली मौसाद की सरकार का तख्ता पलट करवाया था और अपने पिट्ठू रजा शाह पहलवी की ईरान के शाह के रूप में ताजपोशी की थी। अभी भी वे उसी के अमरीका में शरण लिए बेटे को गद्दी पर बिठाना चाहता है। यही शाह था, जिसने अपनी निर्मम तानाशाही के जरिये न सिर्फ ईरान की मजबूत कम्युनिस्ट पार्टी सहित सभी उदार और प्रगतिशील ताकतों को कुचल दिया, बल्कि ईरान के तेल और संपदा पर अमरीकी कंपनियों का वर्चस्व फिर से कायम करवा दिया। इस सबके नतीजे में पैदा हुए शून्य को 1979 में हुई इस्लामिक क्रांति ने भरा। यह अघट सिर्फ ईरान के साथ ही नहीं घटा, जहां-जहां अमरीका और साम्राज्यवाद ने तख्ता पलट कर पिट्ठू तानाशाहियों की स्थापना की, वहां-वहां कट्टरपंथी शक्तियां ही हुकूमतों में आयीं। ईराक से लेकर अफगानिस्तान, लीबिया से सीरिया तक ऐसे उदाहरण अनेक हैं। दुनिया के सबसे बुरे, दुष्ट और नरसंहारी इजरायल को अपनी गोद में बिठाकर अब ठीक इसी तरह की अतिरंजित छवि ईरान की बनाई जा रही है। टाइम्स ऑफ़ इंडिया में छपी एक पत्रकार की ईरान की आँखों देखी रिपोर्ट छपी है, इसमें वे लिखते हैं : 'नवम्बर के अपने दौरे में मैंने देखा कि कई महिलाएं हिजाब नहीं पहनती थीं। भारत के कुछ हिस्सों की तुलना में ईरान के शहरों के अधिकांश हिस्सों में धार्मिकता कम स्पष्ट दिखाई देती थी। नाइटलाइफ़ बिल्कुल भी खत्म नहीं हुई थी, बल्कि बहुत अच्छी थी। ईरान की जनता द्वारा इज़राइल और अमेरिका को नफरत वाले देशों के रूप में नहीं देखा जाता था।' उसने आगे लिखा कि 'भारतीय दूतावास के अधिकारियों ने हमें बताया कि ईरान शायद आज भारत की तुलना में कम धार्मिक है। उनमें से एक ने कहा कि तेहरान की एक तिहाई मस्जिदें बंद हो गई हैं, क्योंकि कोई उनमें जाता ही नहीं है। यह बात पूरे ईरान की मस्जिदों के लिए सच है। जो लोग जाते हैं, ज्यादातर वे लोग हैं, जिन्हें सरकार से वित्तीय सहायता मिलती है, और यह सहाग्रता धार्मिक संस्थाओं के माध्यम से वितरित की जाती है। यह अनुदान की शर्तों में से एक है।'

इस सबके बावजूद इस नाजायज युद्ध को धर्मयुद्ध - क्रूसेड - साबित करने की कोशिश अमरीकी साम्राज्यवाद की नई चाल भर नहीं है। यह अदा वह पहले भी आजमाता रहा है। अभी हाल ही की बात है, जब 9/11 के बाद, तत्कालीन राष्ट्रपति जॉर्ज डब्ल्यू. बुश ने 'आतंकवाद के खिलाफ युद्ध' को 'क्रूसेड' कहा था। दुनिया भर में हुई तीखी प्रतिक्रिया के बाद इस शब्द का उपयोग तो कम कर दिया गया, मगर व्यवहार में 'इस्लामोफोबिया' को ही हवा दी जाती रही। इस बार बात आगे की है। दुनिया के कई गैर-मार्क्सवादी राजनीतिक पर्यवेक्षक भी अब मानने लगे हैं कि यह सारी कवायद पूरी दुनिया को पिछली सदी के पूर्वार्ध की औपनिवेशिक गुलाम दुनिया में बदलने - वह भी अतिशीघ्र बदलने - की है। इसके लिए सैमुअल हटिंगटन के ''सभ्यताओं के टकराव' के सिद्धांत को अमल में - वह भी जल्दी से जल्दी - लाने की है। जैसा कि पहले भी जिक्र किया जा चुका है कि सोवियत संघ के पतन और समाजवाद को लगे धक्के के बाद की दुनिया को अपने हिसाब से पुनर्गठित करने के लिए 1996 में एक अमरीकी 'विचारक' हंटिंगटन का दावा था कि शीत युद्ध की समाप्ति के बाद, अब दुनिया में संघर्ष का मुख्य आधार सांस्कृतिक और धार्मिक पहचान होगी। उसका मानना था कि भविष्य के युद्ध देशों के बीच नहीं, बल्कि अलग-अलग सभ्यताओं के बीच होंगे। वियतनाम युद्ध के समय अमरीकी सलाहकार रहे इस व्यक्ति ने अपने इस 'सिद्धांत' का आधार इस धारणा को बनाया था कि पश्चिमी सभ्यता सबसे विकसित और आदर्श है, बाकी इससे कमतर हैं, इसलिए उन्हें अंततः खत्म होना होगा और पश्चिम के अधीन रहकर उसकी तरह सभ्य बनना होगा। हटिंगटन ने पश्चिम का टकराव जिन 7 'सभ्यताओं' से बताया था, उसने उनमें इस्लामिक, चीनी, हिन्दू , ऑर्थोडॉक्स रूसी, जापानी, लैटिन अमेरिकी और अफ्रीकी सभ्यताओं को शामिल किया था। उसने फिलवक्त इस्लाम को निशाने पर लेने की बात कही है। उसका मानना था कि इस्लाम और पश्चिम मतलब ईसाई सभ्यता के बीच गहरे सांस्कृतिक अंतर हैं, जो भविष्य में संघर्षों का कारण बनेंगे। ईरान, एक इस्लामी गणराज्य के रूप में, अक्सर पश्चिम और उसके सहयोगियों जैसे इज़राइल के साथ सीधे टकराव में रहता है। हंटिंगटन ने कहा था कि 'इस्लाम की सीमाएं खूनी हैं।' इन संदर्भों के साथ जोड़कर ट्रम्प का पूजापाठ पाखंड, मार्को रुबियो द्वारा प्रस्तुत खाका और नेतन्याहू द्वारा किया जा रहा नरसंहार देखने से स्थिति पूरी तरह स्पष्ट हो जाती है। भारत सहित दुनिया के सभी गैर साम्राज्यवादी देशों और साम्राज्यवादी देशों की जनता को पूरे परिप्रेक्ष्य में इसे समझना होगा : वरना जो हालात पैदा होने की आशंका दिख रही है, ताज्जुब नहीं होगा, यदि हिटलर जैसो को भी पीछे छोड़ दे।

धर्म को मानने वाले भी धर्म के इस दुरुपयोग की आशंका से भलीभांति अवगत हैं। ईसाई धर्मगुरु पोप लियो चौदहवे ने बाकायदा बयान जारी करके अपना रुख स्पष्ट किया है। इस बयान में मध्य-पूर्व में युद्ध विराम की मांग के साथ उन्होंने सीधे तौर पर ईरान में युद्ध शुरू करने वाले नेताओं की भी आलोचना की है और ट्रंप को स्वार्थी और आत्ममुग्ध तक कह दिया है। ईरान के एक प्राथमिक विद्यालय पर हुए मिसाइल हमले, जिसमें 165 से अधिक बच्चे और शिक्षक मारे गए थे, को नरसंहार बताते हुए वेटिकन ने 6 मार्च को अपने आधिकारिक समाचार पत्र के पहले पृष्ठ पर 'युद्ध का चेहरा' शीर्षक के तहत युवा पीड़ितों के लिए खोदी जा रही सामूहिक कब्र की हवाई तस्वीर प्रकाशित की है। पोप लियो ने कहा कि वे उन परिवारों के बहुत करीब हैं, जिनके सदस्य उन हमलों में मारे गए हैं, जिनमें स्कूल, अस्पताल और आवासीय केंद्र प्रभावित हुए हैं। उन्होंने लेबनान युद्ध पर भी चिंता जताई। इसी के साथ मध्य-पूर्व के ईसाइयों और सभी नेक इरादे वाले पुरुषों और महिलाओं की ओर से, इस संघर्ष के लिए जिम्मेदार लोगों से अपील की कि वे युद्ध विराम करें, ताकि संवाद के रास्ते फिर से खुल सकें। इसके बाद हुए एक आयोजन में उन्होंने यहाँ तक कहा कि 'क्या उन ईसाइयों में, जो सशस्त्र संघर्षों में गंभीर जिम्मेदारी निभाते हैं, अंतरात्मा की गंभीरता से जांच करने और पश्चाताप करने की विनम्रता और साहस है? '

हालांकि पोप लियो ने तनाव को भड़काने से बचने के लिए अपने संदेश को अप्रत्यक्ष और गैर-राजनीतिक रखने की कोशिश की है, मगर अमरीका में उनके कुछ कार्डिनल और वेटिकन के विदेश सचिव ने ऐसा नहीं किया है। वाशिंगटन के आर्कबिशप कार्डिनल रॉबर्ट मैकलॉय ने कहा कि युद्ध नैतिक रूप से अनुचित है।शिकागो के कार्डिनल ब्लेज़ क्यूपिच ने कहा कि व्हाइट हाउस द्वारा युद्ध के बारे में अपने सोशल मीडिया संदेशों में वीडियो गेम की छवियों को शामिल करना 'घृणित' था। वेटिकन के विदेश सचिव, कार्डिनल पिएत्रो पारोलिन ने वाशिंगटन के 'निवारक युद्ध' के दावे को खारिज कर एक तरह से इसे जान-बूझकर छेडा गया युद्ध करार दिया।

इसी तरह की बातें, भले दबे स्वर में, यहूदी रब्बियों के भी एक हिस्से ने कही है और याद दिलाया है कि यहूदी धर्म में युद्ध को एक 'टाली जाने वाली बुराई' के रूप में देखा जाता है, इसलिए इसे केवल तभी अपनाया जाना चाहिये, जब कोई अन्य विकल्प न हो। उन्होंने यह भी कहा कि यहूदी कानून के अनुसार, अपने अस्तित्व और भूमि की रक्षा के लिए लड़ना एक अनिवार्य कर्तव्य माना जाता है। तल्मूड और रब्बियों की शिक्षाओं के अनुसार, युद्ध शुरू करने से पहले हमेशा शांति की तलाश करनी चाहिए। हिंसा का महिमामंडन नहीं किया जाता है।

लुब्बोलुबाब यह है कि जिन धर्मों के नाम पर साम्राज्यवाद अपनी लूट और इजरायल अपनी बर्बरता को ढांपना चाहता है, उस धर्म के प्रमुखों तक ने इस करतूत से अपना पल्ला झाड़ लिया है। धर्म के भीतर भी चिंता का विषय है कि हत्यारे और लुटेरे उसे हथियार के रूप में इतेमाल करना चाहते हैं और यह भी कि वे ऐसा नहीं होने देना चाहते। यह एक ओर धार्मिक और उसका दुरुपयोग करने वालों के बीच अंतर करता है, वहीं कुछ नई संभावनाएं भी प्रस्तुत करता है।

बादल सरोज
'लोकजतन' के संपादक और अखिल भारतीय किसान सभा के संयुक्त सचिव
संपर्क : 94250-06716

जेएसडब्ल्यू स्पोर्ट्स (JSW Sports) ने बंगाल प्रो T20 लीग के कायाकल्प के लिए 3 साल का अनुबंध हासिल किया

कोलकाता, 13 अप्रैल 2026 : भारत के खेल पारिस्थितिकी तंत्र की एक अग्रणी शक्ति, जेएसडब्ल्यू स्पोर्ट्स, ने बंगाल प्रो T20 लीग के लिए कमर्शियल, मार्केटिंग और ऑपरेशंस पार्टनर के रूप में सेवा देने हेतु क्रिकेट एसोसिएशन ऑफ बंगाल (CAB) से तीन साल का अनुबंध हासिल किया है।

इस अनुबंध के हिस्से के रूप में, जेएसडब्ल्यू स्पोर्ट्स लीग के व्यवसायीकरण, मार्केटिंग रणनीति, शुरू से अंत तक लीग संचालन और प्रसारण उत्पादन का नेतृत्व करेगा, जिसका ध्यान सभी हितधारकों और प्रशंसक संपर्क बिंदुओं पर एक निर्बाध, उच्च गुणवत्ता वाला लीग अनुभव प्रदान करने पर होगा। यह एकीकृत अनुबंध जेएसडब्ल्यू स्पोर्ट्स को अगले तीन वर्षों में लीग के रणनीतिक और परिचालन रोडमैप को आकार देने में सबसे आगे रखता है। बंगाल प्रो T20 लीग के साथ जेएसडब्ल्यू स्पोर्ट्स की साझेदारी की आधिकारिक घोषणा सीजन 3 के शानदार लॉन्च समारोह में CAB अध्यक्ष श्री सौरव गांगुली, छ्क्रसचिव श्री बबलू कोले, CAB उपाध्यक्ष श्री नीतीश रंजन दत्ता, CAB संयुक्त सचिव श्री मदन मोहन घोष और छ्क्र कोषाध्यक्ष श्री संजय दास की उपस्थिति में हुई। यह साझेदारी बंगाल प्रो T20 लीग के विकास में एक महत्वपूर्ण कदम है, जो पुरुष और महिला दोनों क्रिकेट में एक प्रमुख घरेलू मंच के रूप में विकसित हो रही है। आगामी संस्करण में नौवीं फ्रेंचाइजी, नोवस पुरुलिया रॉयल्स

(Novus Purulia Royals) का जुड़ना भी देखा जाएगा, जिससे लीग का पदचिह्न (footprint) और बढ़ेगा। यह विस्तार लीग की बढ़ती प्रतिस्पर्धात्मकता और क्षेत्रीय बाजारों एवं निवेशकों की बढ़ती रुचि को दर्शाता है।

लीग की सबसे नई सदस्य टीम और अन्य आठ फ्रेंचाइजी–सोबिस्को स्मैशर्स मालदा, मुर्शिदाबाद किंग्स एंड क्वींस, एडमास हावड़ा वॉरियर्स, सर्वोटेक सिलीगुड़ी स्ट्राइकर्स, श्राची रार टाइगर्स, रश्मि मेदिनीपुर विजार्ड्स और हार्बर डायमंड्स–तीसरे सीजन में इस T20 महाकुंभ को और भी रोमांचक बनाने का वादा करती हैं। लीग को प्रमुख हितधारकों और झूलन गोस्वामी, मोहम्मद शमी, अजिंक्य रहाणे और रिंकू सिंह जैसे अग्रणी भारतीय क्रिकेटरों की उपस्थिति और जुड़ाव से लाभ मिल रहा है, जो सीजन 3 के लॉन्च कार्यक्रम में मौजूद थे। उनकी संबद्धता महत्वपूर्ण विश्वसनीयता और दृश्यता जोड़ती है, जिससे देश भर के प्रशंसकों के साथ लीग का जुड़ाव मजबूत होता है।

इस विकास पर बात करते हुए, जेएसडब्ल्यू स्पोर्ट्स के सीईओ दिव्यांशु सिंह ने कहाः 'बंगाल की एक समृद्ध क्रिकेट विरासत है और देश में सबसे जुनूनी प्रशंसक आधारों में से एक है। हम बंगाल प्रो T20 लीग के विकास के अगले चरण को आकार देने में मदद करने के लिए क्रिकेट एसोसिएशन ऑफ बंगाल के साथ साझेदारी करके उत्साहित हैं। हमारा ध्यान एक व्यावसायिक रूप से मजबूत, परिचालन रूप से कुशल और प्रशंसक-केंद्रित लीग बनाने पर होगा जो सभी हितधारकों - खिलाड़ियों, फ्रेंचाइजी, भागीदारों और प्रशंसकों के लिए दीर्घकालिक मूल्य प्रदान करे।

क्रिकेट एसोसिएशन ऑफ बंगाल के मानद सचिव बबलू कोले ने कहाः 'हम बंगाल प्रो T20 लीग के लिए जेएसडब्ल्यू स्पोर्ट्स के साथ साझेदारी करके बेहद खुश हैं। व्यवसायीकरण, मार्केटिंग और लीग संचालन में उनकी विशेषज्ञता लीग को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी। हम प्रतिस्पर्धा की समग्र गुणवत्ता, दृश्यता और प्रभाव को बढ़ाने के लिए उनके साथ मिलकर काम करने के लिए तत्पर हैं। जेएसडब्ल्यू स्पोर्ट्स लीग के समग्र ईकोसिस्टम को मजबूत करने, प्रसारण और प्रशंसक जुड़ाव में नवाचार लाने और नए व्यावसायिक अवसरों को खोलने के लिए क्रिकेट एसोसिएशन ऑफ बंगाल के साथ मिलकर काम करेगा, जिससे बंगाल प्रो T20 लीग की स्थिति एक प्रमुख घरेलू T20 प्रतियोगिता के रूप में और मजबूत होगी। यह साझेदारी प्रतिभा विकास के लिए टिकाऊ रास्ते बनाने और विभिन्न प्रारूपों में गहरे प्रशंसक जुड़ाव पर भी ध्यान केंद्रित करेगी।

नित्या देशवाल, Nitya@conceptpr.com +91 9311018141
पल्लवी रमेश, Pallavi@conceptpr.com